

Date:- 14/05/2020

JUNE 2018						
S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

JULY 2018						
S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

pointment

(2) शरीर मंडिमा :- जिस प्रकार मुख्यमण्डल के विभिन्न अंगों में विकार लाकर भावों की अभिव्यक्ति की जाती है उसी प्रकार कन्धे उन्चकाकर, हाथ उठाकर या गिराकर, मुट्ठी तानकर या खोलकर हाथ फैलाकर या बांधकर, एक हाथ से या दोनों हाथों से या सीधी करके या मटकाकर, आगे को झुकाकर घेरे उठाकर, घुटने टेककर या अनेक प्रकार से शरीर के अंगों का संचालन करके अनेक प्रकार की सामाजिक, धार्मिक और मानसिक परिस्थितियों में तथा भावों के प्रदर्शन में शारीरिक अंगों से विभिन्न प्रकार के भाव प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

जब अभिनेता एक स्थान पर बैठकर या खड़े होकर शारीरिक चेष्टाएँ करता है तो यह चंचल शारीरिक मंडिमा कहलाती है।

(3) वेग :- अभिनय के लिए वेग का भी बड़ा महत्व है। समाधि और शोक की अवस्था में स्थिर बृद्धावस्था और क्लृप्ति की अवस्था में मन्द साधारण शुभा अवस्थाओं में स्वाभाविक गति होती चाहिए। यह वेग मुखमुद्रा शरीर मंडिमा

गति वाणी के समस्त रूपों में व्यापक होना है।